अकबर पर जैन धर्म का प्रभाव

~ आयुष जैन, जयपुर

महान भारतवर्ष की भूमि पर 16 वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य के सम्राट अकबर के राज्य में जैन धर्म का अत्यधिक प्रभाव रहा था।
एक राजा का कर्तव्य होता है कि वह सभी धर्म -दर्शनों की श्रद्धा एवं उसका सम्मान करे। यदि वह एक धर्म के प्रति ही अटल रहेगा तो वह योग्य शासक नहीं बन पाएगा।
चूंकि सभी धर्मों की श्रद्धा एवं सम्मान करने से अकबर सम्राट भी योग्य शासक थे और उसमें अकबर ने जैन धर्म को भी जोड़कर उसके सिद्धांतों को समझा और अपने जीवन में उतारा।
अकबर के जीवन में जिनशासन का प्रभाव पढ़ा था जिसका उल्लेख आधुनिक काल के विकास में बढ़ते विद्वानों ने अपनी रचनाओं में किया है। जो निम्न प्रकार से हैं:-

अब्द-उल-कादिर बदायूंनी एक फारसी इतिहासकार ने लिखा है कि
"सम्राट अन्य सम्प्रदायों की अपेक्षा श्रमणों जैन साधुओं और हिंदू गुरुओं से एकान्त में विशेष रूप से मिलता था और उनके साथ में विशेष समय बिताता था। वे नैतिक, शारीरिक, धार्मिक और आध्यात्मिक शास्त्रों में धर्मोन्नति की प्रगति को समझता था"(1)

पादरी पिन्हेरो ने लिखा है कि "अकबर जैन धर्म का अनुसरण करता था।" (2)
(Akbar followed the sect of jainas)

अकबर पर जैन साधुओं का प्रभाव इसलिए भी अधिक पढ़ा था; क्योंकि जैन साधु निस्पृही और अपरिग्रहवान होते हैं, ये ही उनकी चित्त भूमि को स्वीकार था तथा वे राजाओं से अपनी सुख-सुविधाओं के लिए कुछ नहीं मांगते थे। यह बात डॉ. ज्योतिप्रसाद जी के कथन से समझ सकतें हैं। (3)

डॉ. ज्योतिप्रसाद लिखते हैं कि "मुनि शांतिचंद्र से सम्राट अकबर बहुत प्रभावित हुए थे। उनके निमित्त से अकबर ने मांस का त्याग व ईद पर पशुओं की बलि का त्याग किया था"। (4)

डा. विन्सेंट स्मिथ ने भी अकबर के राज्यकालीन विचारों में चरणानुयोग का उल्लेख करते हुए लिखा है कि

"Men are so accustomed to meat that, were it not for the pain, they would undoubtedly fall on to themselves."
"From my earliest years, whenever I ordered animal food to be cooked for me, I found it rather tasteless and cared little for it. I took this feeling to indicate the necessity for protecting animals, and I refrained from animal food."
अर्थात् - 'मनुष्यों को मांस खाने की ऐसी आदत पड़ जाती है कि - यदि उन्हें दुःख न होता तो वे स्वयं अपने आप को भी अवश्य खा जाते।'
'मैं अपनी छोटी उम्र से ही जब-जब मांस पकाने की आज्ञा करता था तब- तब वह मुझे नीरस लगता था। तथा उसे खाने की मैं कम अपेक्षा रखता था । इसी वृत्ति के कारण पशु रक्षा की आवश्यकता की तरफ मेरी दृष्टि गई और बाद में मैं मांस भोजन से सर्वथा दूर रहा।'(5) अतः जैन धर्म के चरणानुयोग की छांव भी अकबर के जीवन में दिखती है।
जैन संतों के सानिध्य से सम्राट अकबर का जीवन अहिंसामय हो गया था यह बात अबुलफजुल के शब्दों से ज्ञात होती है - "It is not right that a man should make his stomach the grave of animals "(6)
अर्थात् यह उचित नहीं है, कि मनुष्य भूख के लिए अपने पेट को
जानवरों की कब्र मनाए।

आचार्य हीरविजयसूरि को अकबर ने "जगद्गुरु" की उपाधि दी थी।(7)
मुगल सम्राट् अकबर ने अपने जीवन पर प्रकाश डालते हुए यह भी कहा है "मांस भक्षण प्रारम्भ से ही मुझे अच्छा नहीं लगता था, इससे मैंने उसे प्राणिरक्षा का संकेत समझा और मैंने मांसाहार छोड़ दिया (8)

अकबर सम्राट ने खंभात की खाड़ी में मछली पकड़ने पर प्रतिबंध लगाया और अष्टाह्निका महापर्व महापर्व मे पशु हत्या का निषेध किया था। (9)
विजयसेन गणी ने सम्राट के दरबार में "ईश्वर कर्ता हर्ता नहीं है" विषय पर अन्य धर्म के विद्वानों को परास्त किया था ; इसलिए अकबर ने उनको 'सवाई' की उपाधि दी थी।
'सवाई' शब्द का अर्थ होता है "वर्तमान दिग्गज विद्वानों से भी सवाया" ।। (10)

महान इतिहासकार डॉ. स्मिथ यह भी कहते हैं कि -
"But Jain the holy men undoubtedly gave Akbar prolonged instruction for years, which largely influenced his actions; and they secured his assent to their doctrines so far that he was reputed to have been converted to Jainism."

अर्थात् जैन साधुओं ने कई वर्षों तक अकबर को उपदेश दिया था ,इस उपदेश का बहुत प्रभाव सम्राट के जीवन पर पड़ा था। उन्होंने सिद्धान्तों को यहाँ तक मना लिया था कि लोगों में ऐसा प्रवाद फैल गया था कि 'बादशाह जैनी हो गया है।' यह बाद प्रवादमात्र ही नहीं रही थी, किन्तु कई विदेशी मुसाफिरों को अकबर के व्यवहार से निश्चय हो गया था कि 'अकबर जैन सिद्धान्तों का अनुयायी है।' (11)

विद्याहर्षसूरी ने भी लिखा है कि "जैनगुरूओं के प्रभाव से अकबर ने गाय आदि की हत्या का त्याग किया और जैन गुरुओं के प्रति आदर भाव प्रगट किया". (12)
इतिहास के पन्नों में छुपे हुए अनेक प्रमाणों के माध्यम से जाना जाता है कि सम्राट अकबर, जैन धर्म का सम्मान करता था। जैनधर्म व संतो का गहरा प्रभाव अकबर के जीवन में पड़ा था। इसप्रकार महान जैनधर्म की यशोगाथा मुस्लिम धर्म को व अन्य धर्मों को लंबे समय से प्रभावित करती आ रही है।

संदर्भ सूची: -

1 अकबर की धार्मिक नीति, (लेखक अबुल फजल) पृष्ठ. 88, 89
2 सुरीश्वर और सम्राट, (लेखक श्री कृष्ण लाल) पृष्ठ 171-172
3 प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलाएं, पृष्ठ 302
4 प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलाएं, पृष्ठ 302

5 Akbar the great Mughal (Ira mukhoty) pg.335 336
6 जैन शासन (लेखक पंडित सुमेरूचंद्र दिवाकर) पृष्ठ. 189
7 दिगंबरत्व और दिगंबर मुनि (कामता प्रसाद जैन) पृष्ठ.154
8 Jain Gazette olume 17 pg. 32
9 प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलाएं पृष्ठ.300
10 मध्य एशिया और पंजाब में जैन धर्म (पंडित हीरालाल जी दुग्गड़) पृष्ठ.293
11 अकबर प्रतिबोधक कोन?? (संपादक - भूषण शाह) पृष्ठ.43
12 प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलाएं पृष्ठ. 305